Mahatma Gandhi Shati Smarak Mahavidyalaya,

Garua Maksoodpur, Ghazipur

Five days Teacher's Festival

Date: September 05-07, 2022

पंच दिवसीय शिक्षक पर्व दिनांक 5 सितम्बर से 9 सितम्बर 2022

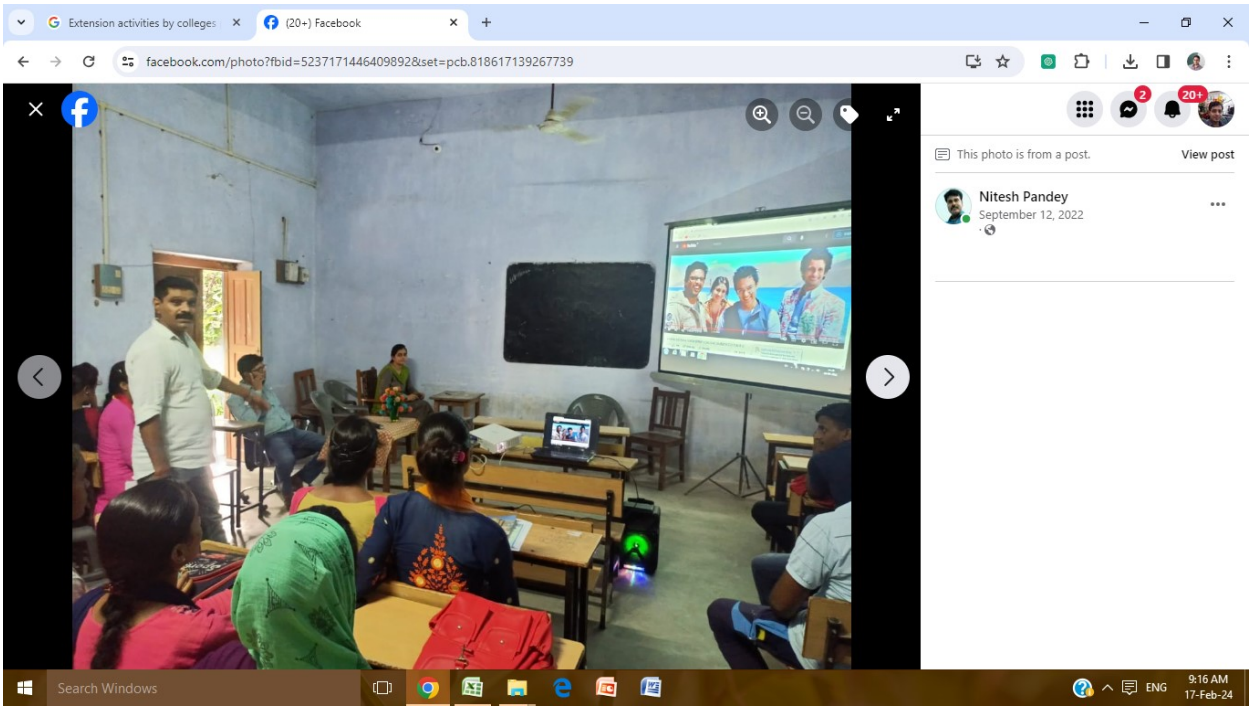

ब्रह्मगुप्त (५९८-६६८) प्रसिद्ध भारतीय गणितज्ञ थे। वे तत्कालीन गुर्जर प्रदेश (भीनमाल) के अन्तर्गत आने वाले प्रख्यात शहर उज्जैन (वर्तमान मध्य प्रदेश) की अन्तरिक्ष प्रयोगशाला के प्रमुख थे और इस दौरान उन्होंने दो विशेष ग्रन्थ लिखे: ब्राह्मस्फुटसिद्धान्त (सन ६२८ में) और खण्डखाद्यक या खण्डखाद्यपद्धति (सन् ६६५ ई में)।
ब्रह्मगुप्त का सबसे महत्वपूर्ण योगदान चक्रीय चतुर्भुज पर है। उन्होंने बताया कि चक्रीय चतुर्भुज के विकर्ण परस्पर लम्बवत होते हैं। ब्रह्मगुप्त ने चक्रीय चतुर्भुज के क्षेत्रफल निकालने का सन्निकट सूत्र (approximate formula) तथा यथातथ सूत्र (exact formula) भी दिया है।
√((t-p) (t-q) (t-r) (t-s))
ब्रह्मगुप्त ने द्विघातीय अनिर्धार्य समीकरणों (Nx2 + 1 = y2) के हल की विधि भी खोज निकाली।
ब्रह्मगुप्त

HER STOR
"Sit idle no more.
Go get education."
Savitribai Phule
सावित्रीबाई फुले
• भारत के प्रथम महिला विद्यालय की प्रथम महिला शिक्षिका।
• आधुनिक मराठी कविता के संस्थापक।
• ऐसे समय में जब महिलाओं की क्षमता और क्षमता को कम करके आंका गया, उन्होंने देश में महिलाओं के उत्थान और शिक्षा के लिए काम किया।
• अपने पति की मदद से उन्होंने अछूत लड़कियों के लिए एक स्कूल खोला।
• उच्च जाति के रूढ़िवादी लोग उसके प्रयासों का मजाक उड़ाते थे और उस पर पत्थर और गोबर फेंकते थे। फिर भी, उसने अपना अध्यापन जारी रखा।
• बाद में ब्रिटिश सरकार ने शिक्षा में उनके योगदान को सम्मानित किया।

भरतमुनि
भरतमुनि का समय 400 ई॰पू॰ 100 ई॰ सन् के बीच का माना जाता है। भरत बड़े प्रतिभाशाली थे। इतना स्पष्ट है कि भरतमुनि नाट्यशास्त्र के गहन जानकार और विद्वान थे।
इनके द्वारा रचित ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' भारतीय नाट्य और काव्यशास्त्र का आदिग्रन्थ है। इसमें सर्वप्रथम रस सिद्धांत की चर्चा तथा इसके प्रसिद्ध सूत्र "विभावानुभाव संचारीभाव संयोगद्रस निष्पति:" की स्थापना की गयी है। इसमें नाट्यशास्त्र, संगीतशास्त्र, छंदशास्त्र, अलंकार, रस आदि सभी का सांगोपांग प्रतिपादन किया गया है। कहा गया है कि भरतमुनि रचित प्रथम नाटक का अभिनय, जिसका कथानक 'देवासुर संग्राम' था, देवों की विजय के बाद इन्द्र की सभा में हुआ था।
आचार्य भरतमुनि ने अपने नाट्यशास्त्र की उत्पत्ति ब्रह्मा से मानी है क्योंकि शंकर ने ब्रह्मा को तथा ब्रह्मा ने अन्य ऋषियों को काव्यशास्त्र का उपदेश दिया। भरतमुनि का नाट्यशास्त्र नाट्य कला से संबंधि प्राचीनतम् ग्रंथ है। विद्वानों का मत है कि भरतमुनि रचित पूरा नाट्यशास्त्र अब उपलब्ध नहीं है। जिस रूप में वह उपलब्ध है, उसमें लोग काफी क्षेपक बताते हैं।

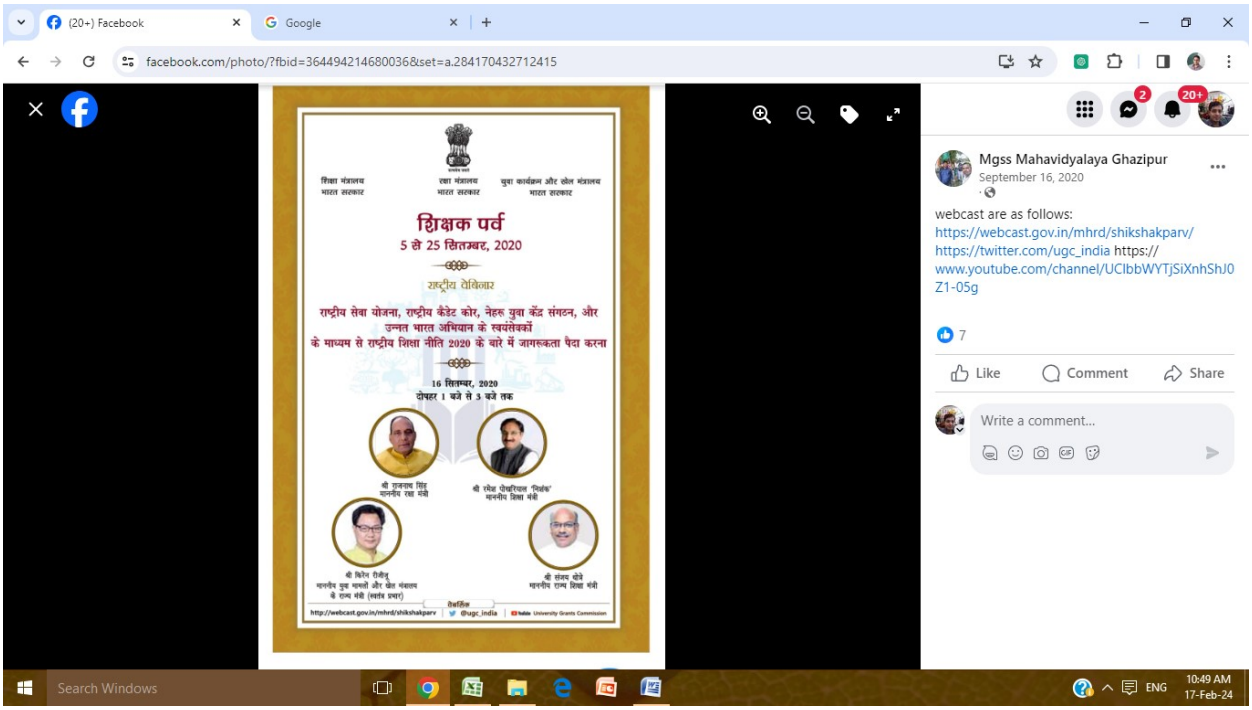

प्राचार्य
महात्मा गांधी शती स्मारक महाविद्यालय
गरूआ, मकसूदपुर-गाजीपुर